LIVE

NET JRF Solutionist

Daily Live 12:00 PM

FILLERFORM LIVE

NTA UGC NET 2022

हिंदी साहित्य(PAPER -2)

इकाई-5

(हिंदी कविता) भाग-4 d

BY JYOTI MA'AM

कबीर पद संख्या – 196 – 209

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

1 5 K Sub

YouTube

2000 users

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

इकाई – V

हिन्दी कविता

पृथ्वीराज रासो – रेवा तट

अमीरखुसरो – खुसरों की पहेलियाँ और मुकरियाँ

विद्यापति की पदावली (संपादक – डॉ. नरेन्द्र झा) – पद संख्या 1 - 25

कबीर – (सं.- हजारी प्रसाद द्विवेदी) – पद संख्या – 160 - 209

जायसी ग्रंथावली – (सं. राम चन्द्र शुक्ल) – नागमती वियोग खण्ड

सूरदास – भ्रमरगीत सार – (सं.- राम चन्द्र शुक्ल) – पद संख्या 21 से 70

तुलसीदास – रामचरितमानस, उत्तर काण्ड

बिहारी सतसई – (सं.- जगन्नाथ दास रत्नाकर) – दोहा संख्या 1 – 50

घनानन्द कवित्त – (सं.- विश्वनाथ मिश्र) – कवित्त संख्या 1 – 30

मीरा – (सं.- विश्वनाथ त्रिपाठी) – प्रारम्भ से 20 पद

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध – प्रियप्रवास

मैथिलीशरण गुप्त – भारत भारती, साकेत (नवम् सर्ग)

जयशंकर प्रसाद – आंसू, कामायनी (श्रद्धा, लज्जा, इड़ा)

निराला - जुही की कली, जागो फिर एक बार, सरोजस्मृति, राम की शक्तिपूजा, कुकरमुत्ता, बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु।

सुमित्रानंदन पंत – परिवर्तन, प्रथम रश्मि

महादेवी वर्मा – बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ, मै नीर भरी दुख की बदली, फिर विकल है प्राण मेरे, यह मन्दिर का दीप इसे नीरव जलने दो, द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र

रामधारी सिंह दिनकर – उर्वशी (तृतीय अंक), रश्मिरथी

नागार्जुन – कालिदास, बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, खुरदरे पैर, शासन की बंदूक, मनुष्य हूँ।

सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय – कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला, हरी घास पर क्षण भर, असाध्यवीणा, कितनी नावों में कितनी बार

भवानीप्रसाद मिश्र – गीत फरोश, सतपुड़ा के जगल

मुक्तिबोध – भूल गलती, ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में

धूमिल – नक्सलवाड़ी, मोचीराम, अकाल दर्शन, रोटी और संसद

UGC NET Giveaway

10th Free Books

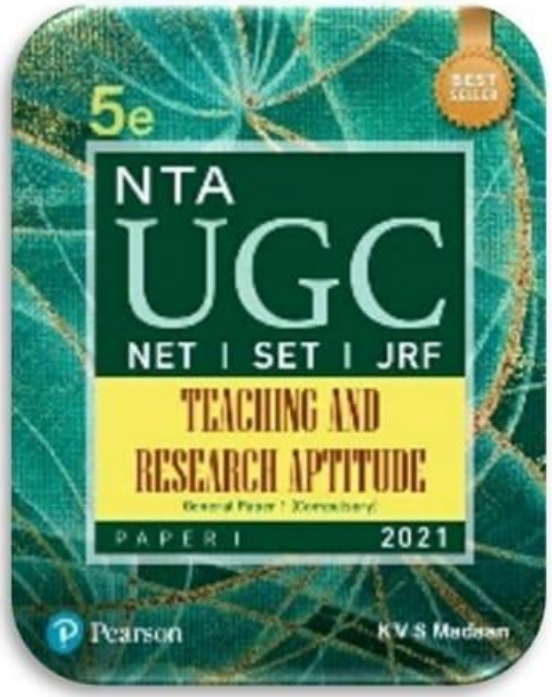

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

हिंदी कविता

कबीर

(संपादक : हजारी प्रसाद द्विवेदी)

पद संख्या – 196-209

8209837844

www.ugc-net.com

कबीर

(संपादक हजारी प्रसाद द्विवेदी) पद संख्या - 196 - 209

पद: 196

मोरि लगी गये बान सुरंगी हो।
धन सत गुरु उपदेश दियो है, होई गयो चित्त भिरंगी हो।
ध्यान पुरुषकी बनी है तिरिया, घायल पाँचो सँगी हो।
घायल की गति घायल जाने, की जानै जात पतंगी हो।
का है कबीर सुनों भाई साधो, निसि

8209837844

www.ugc-net.com

पद: 196

मोरि लगी गये बान सुरंगी हो।
धन सत गुरु उपदेश दियो है, होई गयो चित्त भिरंगी हो।
ध्यान पुरुषकी बनी है तिरिया, घायल पाँचो सँगी हो।
घायल की गति घायल जाने, की जानै जात पतंगी हो।
का है कबीर सुनों भाई साधो, निसि दिन प्रेम उमंगी हो।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 197

गुरु बड़े भृंगी हमारे गुरु बड़े भृंगी।
कौटसों ले भृंग कीन्हा आपसो रंगी।
पाँव औरै पंख औरै और रँग रंगी।
?जाति कूल ना लखै कोई सब भये भृंगी।
नदी-नाले मिले गंगे कहलावै गंगी।
दरियाव-दरिया जा सामने संग में संगी।
चलत मनसा अचल कीन्ही मन हुआ पंगी।
तत्मे :निःतत्त दरसा संग में संगी।
बंधतें निर्बंध कीन्हा तोड़ सब तंगी।
कहै कबीर किया अगमगम नाम रँग रंगी।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद:198

पिया मेरा जागे मैं कैसे सोई री।
पाँच सखि मेरे सँगकी सहेली,उन रँग रँगी पिया रंग न मिली री।
सास सयानी ननद-बोरानी,उन डर डरी पिय सार न जानी री।
दादस ऊपर सेज बिछानी,चढ़ न सकौ मारी ला लजानी री।
रात दिवस मोहिं कूका मारे,मैं न सुनी रचि रहि संग जार री।
कहै कबीर सुनु सखी सयानी,बिन सतगुरु पिया मिले न मिलानी री।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 200

परबति परबति मैं फिरता,नैन गँवाए रोई।
सो बूटी पाऊँ नहीं, जातै जीवन होई।।1।।
नैन हमारे जलि गए, छिन छिन लोड़े तुज्झ।
नां तू मिलै न मैं सुखी, ऐसी बदन मुज्झ।।2।।
सुखिया सब संसार है, खाये अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरु रोवै।।3।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 201

आई न सकौ तुज्झपै, सकूँ न तुज्झ बुलाइ।
जियरा यौंही लेहुगे, विरह तपाइ तपाइ।।1।।
यहु तन जालौ मँसि करौ, लिखौ रामका नांउँ।
लेखँणि करूँ करंककी, लिखि लिखि राम पठाउँ।।2।।
इस तनका दीवा करौ, बाती मेलूँ जीव।
लोही सिचौ तेल ज्यूँ, कब मुख देखौ।।4।।
कै बिरहिनकूँ मीच दे, कै आपा दिखलाइ।
आठ पहरका दाझणा, मोपै सहा न जाइ।।5।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 202

कबीरा प्याला प्रेमका, अंतर दिया लगाय।
रोम रोमसे रमि रह्या, और अमल क्या खाए।।1।।
कबीरा हम गुरु-रस पिया, बाकी रही न छाक।
पाका कलस कुम्हार का, बहुरि न चढ़सी चाक।।2।।
राता-माता नामका, पीया प्रेम अघाय।
मातवाला दीदार का, माँगें मुक्ति बलाय।।3।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 203

ऐ कबीर, तै उतरि रहु, संबल परो न साथ।
संबल घटे न पग थकै, जीव बिराने हाथ।।1।।
कबीरा का घर सिखरपर, जहाँ सिलहली मैल।
पाँव न टिकै पिपीलिका, खलकन लादे बैल।।2।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 204

काल खड़ा सिर उपरे,
जागु बिराने मीतजाका घर है गैलमे,
सौं कस सोय निचीत।।1।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 205

छाकी परयों आतम मतवारा।पीवत रामरस करत बिचारा।।
बहुत मोलि मंहगै गुड़ पावा।लै कसाब रस राम चुवावा।।
तनँ पाटन मै कीन्ह पसारा।माँगि-माँगि रस पीवै बिचारा।।
कहै कबीर फाबी मतवारी।पीवत रामरस लगी खुमारी।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 206

सब दुनी सयानी मैं बौरा,हम बिगरे बिगरौ जनि औरा।
मैं नहिं बौरा राम कियो बौरा,सतगुरु जार गयौ भ्रम मोरा।
बिदया न पढूँ वाद नहिं जाँनूं,हरि गुण कथत-सुनत बौ बौराँनुं।।
काम-क्रोध दोऊ भये बिकारा,आपहि आप जरै संसारा।।
मिठो कहा जाहि जो भावे,दास कबीर रांम गुण गावै।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 207

नैहरमें दाग लगाय आई चुनरी।
ऊ रँगगरेजवा कै मरम न जानै,नहिं मिलै धोबिया कौन करै उजरी।
तनकै कूंडी ज्ञान का सौदन,साबुन महँगा बिचाय या नगरी।
पहिरि-ओढ़ीके चली ससुरारिया,गौवाँ के लोग कहै बड़ी फुहरी।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो,बिन सतगुरु कबहूँ नहिं सुधरी।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 208

सील-संतोखते सब्द जा मुखबसै, संतजन जौहरी साँच मानी।
बदन बिकसित रहै ख्याल आनंदमे, अधरमें मधुर मुस्कात बानी।
साँच गेलै नहीं झूठ बोलै नैन, सूरतमें सुमति सोई श्रेष्ठ ज्ञानी।
कहत हौ ज्ञान पुक्कारि कै सबनसो, देत उपदेस दिल दर्द ज्ञानी।
ज्ञान को पूर है रहनिको सूर है, दया की भक्ति दिलमाही ठानी।
औरते छोर लौ एक रस रहत है, ऐस जन जगतमें बिरले प्रानी।
ठग्ग बटपार संसारमें भरि रहे, हंसकी चाल कहाँ काग जानि।

8209837844 www.ugc-net.com

चपल और चतुर है बने चीकने, बातमें ठीक पै कपट ठानी।
कहा तिनसो कहो दया जिनके नहीं, घाट बहुतै करै बकुलध्यानी।
दुर्मती जीवकी दुबिध छूटै नहीं, जन्म जन्मान्त पड़ नर्क खाली।
काग कुबुद्धि सुबुद्धि पावै कहाँ, कठिन कट्ठोर बिकराल बानी।
अगिनके पुंज है सितलता तन नाही, अमृत औ विष दोऊ एक सानी।
कहा साखी कहें सुमति जागी नहीं, साँचीकी चाल बिन धूर घानी।
सुकृति औ सत्तकी चाल साँची सही, काग बक अधमकी कौन खानी।
कहै कबीर कोऊ सुधर जन जौहरी, सदा सावधान पिये नीर छानी।।

8209837844 www.ugc-net.com

पद: 209

अपनपौ आप ही बिसरो।
जैसे सोनहा काँच मंदिरमें भरमत भूंकि मरो।
जो केहरि वपु निरखि कूप-जल प्रतिमा देखी परो।
ऐसे हि मदगंज फाटिक शिलापर दसननि आनि अरो।
मरकर मुठी स्वाद ना बिसरै घर-घर नटत फिरो।
कह कबीर नलनीकै सुनवा तोहि कौन पकरो।।

धन्यवाद....

For More Information

8209837844

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com